राग नट–संक्षिप्त विवरण

यह प्राचीन राग पुष्टिसम्प्रदाय के मुख्य रागों में माना जाता है। सायंकालीन सेवा के प्रथम तथा दूसरे दर्शन (भोग—समय) में अधिकतर इसी राग के पद गाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त "नटनारायण" राग का भी क्वचित् उल्लेख दृष्टिगत होता है, किन्तु यह अल्पसंख्यक होने से प्रचार में नहींवत् है। नट राग के निकट का 'छाया–नट' राग भी प्रचार मे हैं, किन्तु कीर्तनसंग्रहों में एवं परम्परा में 'नट' का ही व्यवहार है। नट एवं छायानट की भिन्नता इसके वादी, संवादी, थाट, जाति, चलन के अतिरिक्त दोनों मध्यमों के प्रयोग से स्पष्ट होती है।

शास्त्रग्रन्थों में नट को कहीं 'नाट' भी कहा गया है तथा थाट शंकराभरण माना गया है। नट का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी षड्ज हैं। कोमल निपाद का भी कहीं कहीं प्रयोग किया जाता हैं। सांनिधनिप, रेगमप, सारेसा स्वर रागवाचक हैं।

उठाव : सा, ग, म, पगम, रेगमप, मग, मरे, सा.

चलन : सा, ग, गम, म, पम, ग, ग, म, प, सांधनिप, मग, रे, ग, मप, सारेसा.

राग नट–ताल अर्ध–आडाचौताल

प्रीतम प्रीति ही तें पैयें।
यद्यपि रूप गुण सील सुघरता, इन बातन न रिझैयें ॥१॥

सतकुल जनम करम सुभ लच्छन, वेद पुरान पढैयें।
'गोबिंद'प्रभु बिन स्नेहसुवा को, रसना कहा जु नचैयें ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
म	–	गम	प	–	ध	निध	सां	धनि	प	प	रे	ग	म
श्री	ऽ	तिऽ	हा	ऽ	तें	ऽऽ	पै	ऽऽ	ये	श्री	ऽ	त	म
ध	नि	प	रे	ग	गम	प	म	रे	सा	ध	प	रेग	मप
श्री	ऽ	ति	ही	ऽ	तेंऽ	ऽ	पै	ऽ	यें	श्री	ऽ	तऽ	मऽ

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
म	प	प	सां	सां	रें	सां	ध	धनि	सांरें	सां	निसां	ध	निप
य	द्य	पि	रू	प	गु	न	सी	लऽ	सुऽ	घ	रऽ	ता	ऽऽ
म	म	गग	प	प	निध	सां	रेंसां	धनि	प	ध	प	रेग	मप
इ	न	बाऽ	त	न	नऽ	रि	झैऽ	ऽऽ	यें	श्री	ऽ	तऽ	मऽ

संचारी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सांनि	सां	सां	सां	सां	ध	प	धनि	ध	प	प	रे	ग	म
सत	कु	ल	ज	न	म	क	रम	सु	भ	ल	ऽ	च्छ	न
नि	ध	प	रे	ग	गम	प	म	–	–	रे	–	सा	–
वे	द	पु	रा	ऽ	नऽ	प	है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें	ऽ

राग नट–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

रूप देख नेना पलक लागें नहीं ।
गोवरधनधरके अंग–अंग पर दृष्टि परत चित रहत तहीं तहीं ॥१॥
कहा कहों अंग अंगकी बानिक चित चोर्यौ मागदही ॥
'कुंभनदास'प्रभुके मिलनकी सुंदर बात सखियनसों कही ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	सांध	ध	नि	प	ध	—	प	—	प
रू	प–	दे	—	ख	ने	—	ना	—	प
रे	रे	ग	म	प	मग	म	सा	रे	सा
ल	क	ला	—	—	गें–	—	न	हीं	—

अन्तरा

×		२			०		३		
प	—	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां
गो	—	व	—	र	ध	न	ध	र	के
निसां	गं	गं	गंमं	पं	मंगं	मं	रें	—	सां
अं–	—	ग	अं–	—	ग–	—	प	—	र
ध	प	म	—	मग	प	प	सां	धनि	प
दृ	—	ष्टि	—	प–	र	त	चि	––	त
रें	सां	ध	नि	प	प	रे	रे	ग	म
र	ह	त	—	त	हीं	—	त	हीं	—

संचारी

×		२			०		३		
म	—	म	—	मग	प	—	प	—	प
क	—	हा	—	क—	हूं	—	अं	—	ग
ध	नि	ध	प	—	प	रे	रे	ग	म
अं	—	ग	की	—	बा	—	नि	क	—
सां	ध	ध	नि	प	प	—	रे	—	ग
चि	—	त	—	—	चो	—	यीं	—	—
रे	ग	ग	म	प	मग	म	रे	सा	—
मा	—	ग	—	द	ही—	—	—	—	—

राग पूर्वी, सं. विवरण

सम्प्रदाय की नित्यकीर्तनप्रणाली के मुख्य रागो में पूर्वी राग का स्थान आवश्यक है। नित्यक्रम के उपरान्त बधाई और त्यौहारों में भी इस राग के पद गाये जाते हैं। यह राग भोग तथा संध्या के दर्शन-समय गाया जाता है। हस्तलिखित संग्रहों में पूर्वी के अतिरिक्त कहीं कहीं पूर्या का भी उल्लेख प्राप्त होता है। गत शताब्दी के वृद्ध कीर्तनकारों से पूर्वी के दो प्रकार सुने जाते थे। एक मारवा थाट की और दूसरी पूर्वी थाट की, किन्तु आजकल दोनों मध्यमोंवाली पूर्वी अनुसार का स्वरूप भी सम्प्रदाय में मालूम होता है।

अष्टछापीय गानपरम्परा की दृष्टि से देखा जाय तो पूर्वी का थाट मारवा और पूर्वी दोनों थाट माना जायगा। पं. भातखण्डेजी ने भी अपने

शास्त्रग्रन्थ के तीसरे पुस्तक में इस प्रकार की पूर्वी की चर्चा करते हुए कहा है कि

"कुछ गायक वादक पूर्वी में धैवत तीव्र मानते हैं।"

(पृ. १५१, भा. ३)

"पूर्वी में कोई तीव्र धैवत भी मानते हैं"

"उत्तर की ओर प्रवास करते हुए मैने वह प्रकार सुना था।"

(पृ. २७)

तथापि हमने कोमल धैवत का भी प्रयोग करते हुए वृद्ध कीर्तनकारों को सुना है, जिनमें केवल तीव्र मध्यम के 'पूर्या धनाश्री' राग के समान स्वरुप था।

कीर्तनसंग्रहों में पूर्वी राग के पदों को 'पूर्या' के अन्तर्गत उल्लेख करने का यह भी कारण है कि उस समय कुछ गायक-वादक आज की पूर्या धनाश्री को दिन की पूर्या से पहिचानते थे। सम्भव है कि समयान्तर दिन की 'पूर्या' का नाम 'पूर्या धनाश्री' में परिवर्तन हुआ हो, किन्तु पूर्या के साथ धनाश्री का सम्बन बहुत से लोगों की समझ में नहि आता। इस प्रकार मारवा थाट की पूर्वी का उत्तरांग में कल्याण की छाया प्रगट होने के कारण "पूर्वी-कल्याण" नाम प्रचलित होना सम्भवित है।

नाथद्वारा—कांकरोली की गानपद्धति में शुद्ध धैवत की पूर्वी का गान आज भी प्रचार में हैं। आजकल कहीं—कहीं दोनों मध्यमों के प्रयोग वाली पूर्वी का भी कीर्तनगान किया जाता है, जिसको हम आधुनिक प्रकार कहना उचित समझते हैं। कुछ भी हो, हम इस निर्णय पर आना चाहते हैं कि अष्टछाप-गानकी प्राचीन परम्परा मारवा और पूर्वी दोनों थाटों की गायी जाती है, जिसमें रे कोमल, म तीव्र और अन्य सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। गानसमय दिन का अन्तिम प्रहर है। वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। जाति सम्पुर्ण है।

आरोहावरोह :—निरें गमप, मधनि, सां । रेनि, धप, मग, मरे ग, रे सां ।

स्वरविस्तार :—निरे, ग,ग, म प, म ध नि, धप, नि ध प,निनिध प, म ग रे सा ।

दूसरा प्रकार :

आरोहावरोह :— निरेंगमप, धप, निसां । रेंनिधप, मग, मरेंग, रेसा.

राग पूर्वी (पूर्वी थाट)-ताल त्रिताल

कदंब चढि कान्ह बुलावत गैया ।
मोहनमुरलीको सब्द सुनत ही, जहां तहांतें उठि धैया ॥१॥
आवो आवो सखा सिमिट सब, पाई हे इक ठैया ।
'गोविंद'प्रभु बलदाऊसों कहन लागें, अब घरको बगदैया ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३
प — प म	ग रे ग पम	ग रे सा गम	ग रे नि़ रे ग
का — न्ह बु	ला — व त—	गै —— या, क	दं ब च— ढ

अन्तरा

×	२	०	३
मं ग म ध	सां सां सां सां	नि रें गं मंगं	रें सां सां —
मो — ह न	मु र ला को	स — ब्द सु—	न त ही —
रें नि ध प	प ध म पम	ग मरे ग म	ग रे निरे ग
ज हां त हां	तें — उ ठि—	धै —— या क	दं ब च— ढि

संचारी

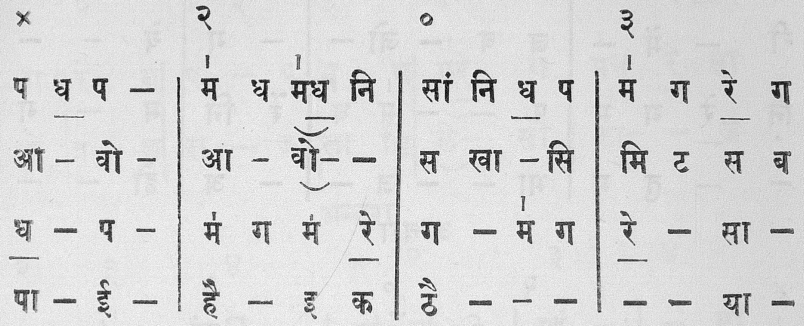
× २ ० ३
प ध प — | मं ध मंध नि | सां नि ध प | मं ग रे ग
आ — वो — | आ — वो — — | स खा — सि | मि ट स ब
ध — प — | मं ग मं रे | ग — मं ग | रे — सा —
पा — ई — | है — इ क | ठै — — — | — — या —

राग पूर्वी, ताल धमार (विलंम्बत)

अहो कैसे जान पावोगे हरि होरी में जब जो गये तुम भाज ।
गारी देहूं भरूं भराऊं मुख मांडोंगी आज ।।१।।
हों अपनो मनभायो करिहों सुनि कुंवर ब्रजराज ।
जगन्नाथ कविरायके प्रभु माई सकल घोख—सिरताज ।।२।।

स्थायी

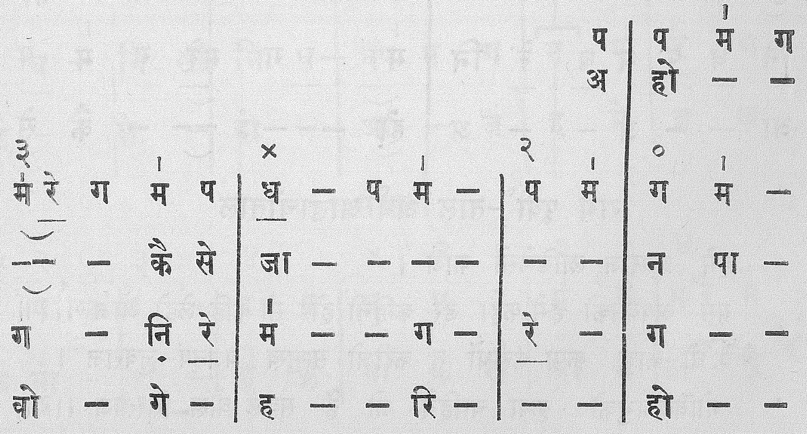
प | प मं ग
अ | हो — —
३ × २ ०
मं रे ग मं प | ध — प मं — | प मं | ग मं —
— — कै से | जा — — — — | — — | न पा —
ग — नि रे | मं — — ग — | रे — | ग — —
वो — गे — | ह — — रि — | — — | हो — —

नि़ रे॒ सा – | सा नि़ रे॒ ग – | – म॑ | ग रे॒ सा
री – में – | ज ब – जो – | – ग | ये – –
नि़ रे॒ ग म॑ | प – – म॑ ध॒ | रें॒ नि | म॑ – ग
– – तु म | भा – – ज – | – अ | हो – –

अन्तरा

×   २   ०   ३
म॑ – ध॒ सां – | – नि | रें॒ – – | सां – – –
गा – – री – | – – | दे – – | हूं – – –
नि – रें॒ गं – | रें सां | सां नि – | नि ध॒ प –
भ – – रुं – | – भ | रा – – | ऊं – – –
पध॒ म॑ – म॑ – | ग – | म॑ – ध॒ | नि – सां रें॒
मुऽ ख – माँ – | – – | डों – – | गी – – –
नि ध॒ प म॑ ध॒ | रें॒ नि | म॑ – ग | म॑रे ग म॑ प
आ – – ज – | – अ | हो – – | –– – कै से

राग पूर्वी–ताल अर्ध आडाचौताल

हमें ब्रजराज लाडिलेसों काज ।
यस अपयसको हमे कहा डर कहिनो होइ सो कहि लेहो आज ॥१॥
कैंधो काहु कृपा करीधों न करीजो सन्मुख ब्रजनृप–जुवराज ।
'गोविंद'प्रभुको कृपा चाहिये जो हैं सकल घोख–सिरताज ॥२॥

स्थायी

३ ४ × २ ३ ४ × २

म ग |रे ग| प — प |म ग| मरे ग |मग रे सा

ह में |ब्र ज| रा — ज |ला डि| ले— सों |का— — ज

अन्तरा

× २ ३ ४ × २ ३ ४

म ग — |म ध| नि — |सां सां — |सां — |— सां

ज स — |अ —| प — |ज स — |को — |— ह

नि रें — |गं —| — गं |म गं रें |सां — |सां —

मे — — |— —| — क |हा — — |ड — |र —

नि नि रें |नि ध| प — |ध प — |म — |ग ग

क हि - |नो —| — — |हो इ — |सो — |— क

म ध — |नि सां| नि ध |धप म ग |म ग |रे ग

हि — — |ले —| हो — |आ— — ज |ह मे |ब्र ज

संचारी

× २ ३ ४ × २ ३ ४

प प ध |प —| प प |ध प प |मं ग |मं रे ग

कैं धो - |का —| हु कु |पा क री |धों न |क— री

म	मध	प	प	—	ग	रे	नि़रे	ग	ग	म	ग	रे	सा
जौ	––	स	न्मु	ख	ब्र	ज	नृप	यु	व	रा	—	—	ज

राग-पूर्वी, ताल-चौताल

आइ हों अकेली आज सांझीके कुसुम लेन भलो मिल गयो तू मोय जात हि घर गाय ले ॥ वरखत बनघोर मेह तामें कुछ सुझत नाहिं चुनरी चटक रंग नीरते बचाय ले ॥१॥ चपला चमक चकचोंधी तें डरत हो फरे, निरमोहि अंग संग क्यों न लगाय ले॥ 'सूरदास' मदनमोहन तुम कहावत सुजान छाडि मान तजि सयान कामरी उढाव ले ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	म	ग	म	ग	रे	सा	—	सा
आ	—	इ	हों	—	अ	के	—	ली	आ	—	ज
नि़	रे	ग	रे	ग	—	म	ग	रे	ग	—	ग
सां	—	झी	—	के	—	कु	सु	म	ले	—	न
प	प	—	म	ग	ग	म	ध	नि	सां	—	सां
भ	लो	—	मि	ल	ग	यो	—	तू	मो	—	य
रें	नि	ध	प	प	प	म	—	ग	म	रे	ग
जा	—	त	हि	घ	र	गा	—	य	ले	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	ध	म	ध	मध	निसां	सां	सां	—	सां
ब	र	ख	त	घ	न	घो–	––	र	मे	—	ह

नि	—	रें॒	गं	रें॒	गं	मं॑	गं	रें॒	सां	—	सां
ता	—	में	—	क	कु	सु	झ	त	नां	—	हिं
सां	—	नि	ध॒	प	प	म॑	—	ग	म॑	—	ग
चू	—	न	री	—	च	ट	—	क	रं	—	ग
म॑ध॒	निरें	नि	ध॒	प	प	म॑	ग	ग	म॑	रे	ग
नी—	——	र	तैं	—	ब	चा	—	य	ले	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	—	प	ध॒	—	म॑	ग	—	ग
च	—	प	ला	—	च	म	—	क	च	—	क
नि़	—	रे॒	ग	—	ग	म॑	ग	रे॒	रे॒	—	ग
चौं	—	धी	तैं	—	ड	र	—	त	हो	—	—
नि़	—	रे॒	ग	रे॒	ग	प	—	प	ध॒	प	प
ए	—	रे	—	नी	र	मो	—	हि	अं	—	ग
म॑ध॒	निसां	नि	ध॒	प	प	म॑	ग	—	ग	म॑रे॒	ग
सं—	——	ग	क्यों	—	न	ल	गा	—	य	ले—	—

राग पूर्वी-कल्याण, ताल चौताल

आगें गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय,
गोविंदको गायनमें बसवोइ भावे ।
गायनके संग धावे गायनमें सचुपावे,
गायनकी खुररेनु अंगसों लगावे ॥१॥
गायनसों ब्रज छायो वैकुंठको बिसरायो,
गायनके हित गिरि कर ले उठावे ।
'छीतस्वामी' गिरिधारी विठ्ठलेस-वपुधारी,
ग्वारियांको भेख धरी गायनमें आवे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	म॑	—	ग	म॑	ग	रे॒	ग	—	ग
आ	—	गें	गा	—	य	पा	—	छें	गा	—	य
नि̣	—	रे॒	ग	—	ग	म॑	ग	रे॒	सा	—	सा
इ	—	त	गा	—	य	उ	—	त	गा	—	य
म॑	ग	ग	रे॒ग	प	प	म॑	ध	नि	सां	—	सां
गो	—	विं	द्—	—	को	गा	—	य	न	—	में
रें॒	नि	ध	प	—	प	ध	प	म॑	ग	मरे॒	ग
ब	स	—	वो	—	इ	भा	—	—	वे	——	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	मं	ग	मं	ध	नि	सां	सां	रें॒	—	सां
गा	—	य	न	—	के	सं	—	ग	धा	—	वे
नि	—	रें॒	गं	—	गं	मं॑	गं	रें॒	रें॒	सां	सां
गा	—	य	न	—	में	स	चु	—	पा	—	वे
नि	—	ध	प	—	प	म॑	ग	—	म॑	ध	नि
गा	—	य	न	—	की	खु	र	—	रे	—	नु
रें	नि	ध	प	—	प	प	—	म॑	ग	म॑रे	ग
अं	—	ग	सों	—	ल	गा	—	—	वे	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	मं	ध	नि	ध	प	प	—	प
गा	—	य	न	—	सों	ब्र	—	ज	छा	—	यो
म॑	—	ग	ग	—	ग	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा	सा
वै	—	कुं	ठ	—	को	बि	स	—	रा	—	यो
नि़	—	रे॒	ग	—	ग	म॑	ध	नि	ध	प	—
गा	—	य	न	—	के	हे	—	त	गि	रि	—

मं	ग	−	ग	−	ग	मं	ग	रे	रे	सा	−
क	र	−	ले	−	उ	ठा	−	−	वे	−	−

राग जेतश्री

यह प्राचीन राग है । सम्प्रदाय की प्रणाली में होली हिंडोला इत्यादि त्यौहारों के दिनों में यह राग गाया जाता है । थाट पूर्वी है । कोई मारवा थाट भी मानते हैं, * किन्तु हमारी परम्परानुसार ही नहीं, किन्तु ओर भी वृद्ध कीर्तनकारों से पूर्वी थाट में सुना है ।

शास्त्रीय ग्रन्थों में भी संगीतपारिजात * (श्लोक नं. ४६५) एवं राग बिबोध ग्रन्थ में रे, ध दुर्बल और थाट पूर्वी कहा गया हैं । वादी पंचम और संवादी षड्ज है । कोई गान्धार वादी, संवादी निषाद मानते हैं । स्वर री ध कोमल और मध्यम तीव हैं । आरोह में री ध वर्ज्य होने से जाति औडव सम्पूर्ण मानी जाती है । समय दिन का चतुर्थ प्रहर है ।

पकड:–निसा, गप, मधप, मग, मगरेसा ।

बिस्तार : (१) सा, नि रेसा, ग, प, म ध म ग प, म ग रेसा, सा रे सा ।

(२) पमप, नि, सा रे रेसा, नि, सां, रें सां, निरें नि ध प, म ध प, मग, मगरेसा ।

(३) म ग म ध प, सां, रें सां, गं रें, निसां रें नि ध प, म प, नि धप, म प, म ग, म ध म ग, प ग रे सा ।

राग जेतश्री–ताल धमार

सोभा सकलसिरोमनि हो दंपति झूलें डोल । मोहनराय झूलही ॥
कनकखंभ मरकत मनि हीरारतन अमोल ॥१॥

चोकी पन्ना पात मनोहर रची रत्ननकी पांत ।
मुक्तामाल सुहावनी कहा वरनों बहुभांत ॥२॥
× × × ×
सुर कुसुमन वरखा करें लीला देखें आय ।
'आसकरन'प्रभु मोहनको जस रह्यो सकल जगछाय ॥११॥

स्थायी

×					२		०			३			
प	–	प	ग	रे॒	सा	ऩि	सा	ग	रे॒	ग	म॑	प	–
सो	–	भा	स	क	ल	सि	रो	–	म	नि	–	हो	–
म॑	ग	ग॑	म	प	नि	सां	सां	नि	ध॒	प	म॑	ग	रे॒
दं	प	ति	झू	–	लें	–	डो	ल	मो	ह	न	रा	य
ऩिसा	ग	सा	ग	म॑	प	–	म॑	ग	रे॒	सा	–	–	–
झू–	–	ल	ही	–	हो	–	झू	–	ल	ही	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
रें	सां	–	नि	ध॒	प	प	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
हा	र	–	र	त	न	अ	मो	ल	मो	ह	न	रा	य
ऩिसा	ग	सा	ग	म॑	प	–	म॑	ग	रे॒	सा	–	–	–
झू–	–	ल	ही	–	हो	–	झू	–	ल	ही	–	–	–

संचारी

×					२		०			३			
प	—	प	म॑	—	ग	—	सा	ग	सा	ग	म॑	प	प
चौ	—	का	प	—	न्ना	—	पा	त	म	नो	—	ह	र
मं	ग	मं	ग	रे॒	सा	नि़	सा	—	ग	रे॒	—	सा	—
र	ची	र	त्न	न	की	—	पां	—	—	—	—	त	—

राग गौंरी, सं. विवरण

यह राग प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त है। सम्प्रदाय की सायंसेवाप्रणाली में सन्ध्यारती समय गाये जानेवाले रागों में यह राग प्रमुख कहा जायगा। अष्टछापीय परम्परा में गौरी विविध प्रकार की बंदिसों में गायी जाती है। यह पूर्वी और भैरव दोनो थाटों में प्राप्त होती है। स्वरों की दृष्टि से यह चार प्रकारों से गाने की प्रथा है।

नित्यसेवाप्रकार के क्रममें पूर्वी थाट की गौरी के पद और भैरव थाट की गौरी के पद अधिकतर सांझी, होरी–धमार आदि त्यौहारों के गाये जाते हैं। पूर्वी थाट की गौरी में कुछ पदो में (१) केवल तीव्र मध्यम की, (२) दोनों मध्यमों के वाली और भैरव थाट की गौरी में (१) केवल शुद्ध मध्यम की (२) कोमल निषाद के प्रयोगों वाली गायी जाती है। आजकल प्रचार में पूर्वी थाट की गौरी में धैवत वर्ज्य कर के गाने की प्रथा है, किन्तु यहाँ आरोह में धैवत वर्ज्य नहीं है।

जाति सम्पूर्ण है। वादी रे, संवादी पंचम हैं। समय सायंकाल सर्वसंमत है।

उठाव (पुर्वीं थाट) :– प, म॑ग, रें॒ ग, रें॒ सा, म॑ध, निसांरे सां, रें॒ निध॒ प, पम॑ग रे॒, ग रे॒, सा, साप, पम॑गरे॒, गरे॒सा, नि, सां, रें॒ निध॒प,

---

* इस प्रकार की गौरी में गाये जानेवाले पदोंका राग माली–गौरीया मालव–गौरी कहा जाता था। लिखित पदसंग्रहोमें यह उल्लेख दृष्टिगोचर होता है।

उठाव (भैरव थाट) :– सानि धनि, रेग रेम,
ग रे सारे नि, सा।

सा नि ध नि, रे ग रे म, ग रे सारे, निनिसा, म ध निसा, धनिसा,
मम रे ग, रे, सा; मप ध पम, रे ग, रे रे सा, नि,सा,
मप ध पम, ध पम, रे ग, रे सा ।

राग गौरी (पूर्वी थाट)–ताल धमार

चल सखी चल अहो ब्रज पेंढ लगी हें जहां बिकात हरिप्रेम ।
सठ सौंघों प्राननके पलटे उलट धर्यो यह नेम ॥१॥
आनि भांति पाइवो दुरलभ, कोटिक खरचो हेम ।
"रामदास"प्रभु रत्न अमोलिक सखी पाइयत एम ॥२॥

स्थायी

३				×					२		०		
म	ध	नि	सां	रें	–	सां	नि	ध	प	प	मप	ध	ध
च	ल	स	खी	च	–	ल	अ	हो	ब्र	ज	पें–	ढ	ल
म	ग	रे	सा	म	ग	ग	म	ध	नि	सां	नि	ध	प
गी	–	हे	–	ज	हां	बि	का	त	ह	रि	प्रे	–	म

अन्तरा

×					२		०			३			
ध	म	ध	नि	–	सां	–	रें	रें	रें	गं	रें	सां	–
स	ठ	–	सों	–	घो	प्रा	न	न	के	प	ल	टे	–
निसां	नि	ध	प	–	म	ध	नि	ध	प	म	ध	नि	सां
उल	टि	ध	यों	–	य	ह	ने	–	म	च	ल	स	खी

संचारी

×	२	०	३
सां नि रें नि ध	प प	मं ध नि	ध प म प
आ – नि भां –	ति पा	इ वो –	दु र ल भ
ध ध ध म ग	रे –	ग रे –	सा – – –
को टि क ख र	चो –	हे – –	म – – –

राग गौरी—(पूर्वी थाट) ताल धीमा त्रिताल

बनतें आवत गावत गोरी ।
मुरली अधर धरें नंदनंदन मानों लगी ठगोरी ॥१॥
याहीतें कुलकान हरी है ओढे पीत पिछोरी ।
ब्रजवधू अटनि चढि देखत रूप निरखि भई बोरी ।
"नंददास" जिन हरिसुख देख्यो तिनको भाग वडोरी ॥३॥

स्थायी

३	×	२	०
प ध नि रें	सां – नि ध	प – ध म	ग रेग रे सा
ब न तैं –	आ – व त	गा – व त	गो –– री –

अन्तरा

×	२	०	३
ध पध नि –	सां सां सां सां	रें – रें रें	गं रें सां सां
मु र– ली –	अ ध र ध	रे – नं द	नं – द न
नि – सां नि	ध प ध म	ग रे सा –	प ध नि रे
मा – नों –	ल गी – ठ	गो – री –	ब न तें –

संचारी

×	२	०	३
प — प —	प — प प	मं — ध ध	पं मं ग —
या — ही —	ते — कु ल	का — न ह	री — हे —
रे — रे —	सा — सा सा	ध — म ग	रे — सा —
ओ — हैं —	पी — त पि	छो — — —	— — रा —

राग गौरी–ताल आदिताल (मात्रा–८) (पूर्वी थाट)

लटकत चलत जुवति सुखदानी ।
संध्यासमें सखा मंडलमें, सोभित तन गोरज लपटानी ॥१॥
मोरमुकुट गुंजा पीयरो पट, मुखमुरली कूजत मृदुबानी ।
'चत्रुभुज'प्रभु गिरिधारी आए बनतें, ले आरती वारत मंदरानी ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२	०	३	×	२	
मं	धनि	निसां	सांसां	निसांनि	धमप	धम	गरे	सा
ल	टक	तच	लत	जु—व	तिसु—	खदा	—नी	—

अन्तरा

×	२	०		३		×	२	०	३	
रें	—रें	—रें	रें	—	रें	गं	रेंसां	—सां	सांसां	—
सं	—ध्या	—स	में	—	स	खा	—मं	—ड	लमें	—
नि	—नि	निसां	नि	ध	प	म	धनि	सांरें	निध	—
सो	—भि	तत	ना	गो	—	र	जल	पटा	——	—

प — | मं ग | मं ध | नि सां |
— — | नी — | ल ट | क त |

संचारी

×   २   ०   ३   ×   २   ३   ४
ध — | प प | प प | प — | मं — | ध नि | नि ध | प प
मो — | र मु | कु ट | गुं — | जा — | पि य | रो — | प ट
प प | प प | मं — | ध — | मं ध | नि सां | रें — | सां —
मु ख | मु र | ली — | गुं — | ज त | मृ दु | बा — | नी —

राग गौरी (पूर्वी थाट)–ताल धमार

वे देखो आवत हे गिरिधारी ।
कछुक गाय आगें अरु पाछें सोभित संग सखारी ॥१॥
खसि रही पाग लटपटी सुंदर अपने हाथ संवारी ।
मोतिनकी लर उर ऊपर झरकत वनमालारी ॥२॥
अंग अंग छबि उठत तरंगन कापें जात निहारी ।
श्रीविठ्ठल गिरिधरन सबनमें चाह तिहारी न्यारी ॥३॥

स्थायी

३   ×   २
मं ध नि सां | रें — सां निध प | ध मंग | रे — सा
वे — दे खो | आ — ब त– हे | — गिरि | धा — री

अंतरा

×   २   ०   ३
पध नि नि सां सां | सां — | रें रें रें | गं रें सां —
कछु क गा — य | आ — | गें अ रु | पा — छें —

रें सां सां नि ध	प प	मंप ध मंप	मं ध नि सां
सा भि त सं –	ग स	खा– –री–	वे – दे खो

संचारी

×	२	०	३
सांसां नि ध प –	प प	मं ध ध	नि ध प प
खस र ही पा –	ग ल	ट प टी	सुं – द र
मं ध प मं ध	मंग रे	ग रे –	सा – – –
अ प ने हा –	थ– सं	वा – –	री – – –

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल धमार

स्याम सनेही गाइये तातें वृंदाबन रज पाइये हो ॥ध्रु०॥
राधा जिनकी भांवती हो, कुंजन कुंजन केलि हो ।
तरु तमाल रही अरुझी मानों, लसत कनककी वेलि हो ॥१॥

× × × × × × ×

अंग अंग रस रगमगे हो, मगन भये हरि नाह ।
'व्यासस्वामिनी' सुखनिधि पिय संगम सिंधु प्रवाह हो ॥५॥

स्थायी

×	२	०	३
सां – – सां –	सां –	रें सां –	ध – प –
स्या – – म –	स –	ने – –	हा – – –
ध म – म प	नि ध	प म –	रे – रे –
– – – गा –	– इ	ये – –	ता – तें –

सा	—	—	म	—	—	—	म	म	—	म	—	म	—
वृं	—	—	दा	—	—	—	ब	न	—	र	—	ज	—
—	—	—	प	—	म	रे̲	रे̲	—	—	सा	—	—	—
—	—	—	पा	—	—	इ	ये	—	—	हो	—	—	—

अंतरा

×					२		०			३			
रें̲	—	—	रें̲	—	—	—	रें̲	रें̲	—	रें̲	—	सां	—
रा	—	—	धा	—	—	—	जि	न	—	की	—	—	—
—	—	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	सां	—	—	—
—	—	—	भां	—	व	—	ती	—	—	हो	—	—	—
नि	सां	—	सां	—	रें̲	—	सां	—	—	नि	—	ध̲	—
कुं	—	—	ज	—	न	—	कुं	—	—	ज	—	न	—
प	ध̲	म	प	नि	—	—	सां	—	—	सां	—	—	—
—	—	—	के	—	—	—	लि	—	—	हो	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	नि	ध̲	—	प	—	म	—
त	रु	—	त	—	मा	—	—	ल	—	र	—	ही	—
प	नि	—	ध̲	—	प	—	प	म	—	प	—	—	—
अ	रु	—	झी	—	—	—	मा	—	—	नों	—	—	—

ध	ध	–	ध	–	ध	–	प	ध	–	प	–	म	–
ल	स	–	त	–	क	–	न	क	–	की	–	–	–
–	–	–	प	–	म	–	रे	–	–	सा	–	–	–
–	–	–	बे	–	लि	–	हो	–	–	–	–	–	–

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल त्रिताल मात्रा-८

मेरे मन आनंद भयो हौं तो फूली अंग न समाऊं ।।ध्रु०।।
सात साखको मेरो राजा, जा घर बजत बधायो ।
देव कुसुम बरखत हें नीके रानी, जसुमति ढोटा जायो ।।१।।

× × × × × × ×

बाजे महा घोर सों बाजत, जसुमति पकरि नचाई ।
'गरीबदास'कों बहो धन दीनो, बहोत पंजिरी पाई ।।४।।

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	–रें	–सां	सांसां	–नि	सांनि	धप	मप	नि
मे	–रे	–न	नआ	–नं	–द	भयो	–हौं	तो
रें	–रें	–सां	सांसां	सांनि	सांनि	धप	मप	नि
फू	–ली	–अं	गन	सामा	––	–उं	––	–

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	–रें	मं–	मंमं	–गं	मंगं	रेंसां	–सां	–
सा	–त	सा–	खको	–मे	–रो	–रा	–जा	–

नि	सांनि	धप	मम	मप	धरें	—सां	——	—
जा	—ध	रब	जत	बधा	——	—ई	——	—
नि	धप	मम	मरे	मप	निध	—प	मप	नि
दे	—व	कुसु	मब	रख	तहें	—नी	केरा	नी
सां	रेंरें	रेंसां	—सां	—नि	सांनि	धप	मप	नि
ज	सुम	तिढो	—टा	—जा	——	—यो	——	—

राग गौरी (भैरव थाट)—ताल त्रिताल (मात्रा-८)

सब दिन तुम व्रजमें रहो हरि होरी हे।
कबहुं न मथुरा जाओ अहो हरि होरी हे ।। परव करो घर आपनें
हरि होरी हे ।। कुशल केलि निवहो अहो हरि होरी हे ।।१।।

× × × × × × × × × × ×

कान्ह कृपा कर घर रहे बरजे मथुरा जात ।
सरस रसिक मणि राधिका हरि. ।
कही कृष्णसों बात अहो हरि होरी हे ।।२९।।

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	रेंरें	रेंसां	सांसां	सां—	निसां—	निध	—प	प
स	बदि	नतु	मब्र	ज—	में——	रहो	—ह	रि
ध	रें—	रेंसां	—ध	प—	ममम	मरे	मम	प
—	हो—	रीहे	——	——	कबहु	नम	थुरा	—
पध	निध	पम	गग	ग—	मग	रेसा	——	—
जा—	—आ	अहो	—ह	रि—	हो—	रीहे	——	—

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३
मं —	मंमं मं	गं रें	रें रें	— सां	रेंगं रें	सां नि	ध प
प —	रव क	रो क	ध र	— आ—	— प	नें —	ह रि
म प	ध रें	सां —	ध प	— म	म म	रे म	म प
— हो	— री	हे —	— —	— कु	श ल	के —	लि नि
पध नि	ध प	म ग	ग ग	— म	ग रे	सा —	— —
वा— —	हो अ	हो —	ह रि	— हो	— री	हे —	— —

राग श्री का परिचय

श्री राग पूर्वी थाट से उत्पन्न होता है । यह राग प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त है । अष्टछापीय संगीतपरंपरा की प्रणाली में यह राग के पद सन्ध्यारती समय गाये जाते हैं । इस रागके पद अधिकतर रास आदि उत्सव त्यौहार के पाये जाते हैं । नित्यकीर्तनप्रणाली में श्री राग का समप्रकृतिक गौरी राग गाया जाता है, किन्तु श्री रागके आरोह में धैवत वर्ज्य होनेसे पुर्वी थाट के गौरी का स्वरूप भिन्न रहता है । आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य हैं और अवरोह सम्पुर्ण है । जाति औडव–सम्पुर्ण है । स्वर रे ध कोमल, मध्यम तीव्र और अन्य शुद्ध स्वर हैं । वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम हैं । गानसमय सूर्यास्त माना गया हैं । इस राग की प्रकृति गंभीर है । ऋषभ पंचम की संगति मनोरंजक होती है ।

आरोहवरोह :—सा, रे रे सा, रे मप, निसां ।

सांनि ध, प, म ग रे,

ग रे॒, रे॒, सा.

पकड :— सा, रे॒ रे॒, सा, प म॑ ग, ग रे॒, रे॒, सा.

राग श्री—ताल त्रिताल

श्री राग गावत व्रजभामिनी ।
निर्तत कोक कला गुन सुंदरि, सकल भामिनीमें बर कामिनी ॥१॥
मिलवत ततथेई तान बंधान, सरद बिमल ससि राका जामिनी ।
'कृष्णदास' गोवर्धनधारी लाल, रिझयो चाहत स्वामिनी ॥२॥

स्थायी

३	×	२	०
म॑ प नि सां	रें॒ — सां सां	नि नि सां —	नि ध॒ प म॑
श्री - रा ग	गा — व त	ब्र ज भा —	मि नी — श्री
प नि — सां	रें॒ — सां सां	नि ध॒प॒ म॑ गरे॒	ग रे॒ सा —
— रा — ग	गा — व त	ब्र ज— भा ——	मि नि — —

अन्तरा

३	×	२	०
म॑ प नि नि	सां — सां सां	रें — सां सां	नि सां ध॒ प
नि र त त	को — क क	ला — गु न	सुं — द रि
म॑ प नि सां	— रें॒ सां —	प सां नि धप	म॑ ग रे॒ सा
स क ल भा	— मि नी —	मैं — व र—	का — मि नी

संचारी

३	×	२	०
प प प प	मंप ध प प	मं — प नि	ध — — प
मि ल व त	त— त थे ई	ता — न बं	धा — — न
म प नि सां	ध प प प	म — प ध	म ग रे सा
स र द बि	म ल स सि	रा — का —	जा — मि नी

राग-श्री, ताल-चर्चरी

जयति जयति हरिदासवर्य धरणे ।
वारि वृष्टि निवार घोख आरति टारी देवपति अभिमान
भंग करणे ।।१।।

जियति पटपीत दामिनिं रुचिर वर मृदुल असामलंग
सजल जलद वरणे ।
कर अधर वेणुधर गान कलरव सव्द सहज
ब्रजजुवतीजन चित्त हरणे ।।२।।

जयति वृंदाविपिन भूमिडोलन अखिल लोक बंदन अंबु
ज असित चरणे ।
तरणितनया तट बिहार नंदगोपकुमार कहत 'कुंभनदास' त्वमसि शरणे ।।३।।

स्थायी

×	२	०	३
			मप नि सां
			ज— य ति
रें रें रें	सां सां	नि ध	प — प
ज य ति	— ह	रि —	दा — स
मप ध ध	म ग	रेग रे	मप नि सां
व— — र्य	ध र	णे— —	ज— य ति

अन्तरा

×			२		०		३		
मंप	ध॒	प	मं	प	नि	नि	सां	—	सां
वा—	—	रि	वृ	—	ष्टि	नि	वा	—	रि
नि	—	रें॒	गं	रें॒	रें	सां	नि	ध॒	प
घो	—	ख	आ	—	र	ति	टा	—	री
म॑	प	नि	नि	सां	रें॒	रें॒	सां	—	सां
दे	—	व	प	ति	अ	भि	मा	—	न
प	सां	नि	ध॒	प	म॑	ग	म॑प	नि	सां
भं	—	ग	क	र	णे	—	ज—	य	ति

संचारी

×			२		०		३		
रे॒	रे॒	सा	प	प	प	—	ध॒	प	—
ज	य	ति	प	ट	पी	—	त	दा	—
म॑	ध॒	प	नि	ध॒	नि	—	प	—	प
मि	—	नी	—	रु	चि	र	व	—	र
म॑	मध॒	म॑	ग	ग	म॑	ग	रे॒	रे॒	सा
मृ	दु—	ल	अं	ग	सा	—	म	ल	स

नि़	रे॒	सा	प	प	म॑प	ध॒	म॑ग	रे॒	सा
ज	ल	ज	ल	द	व—	र	ण—	—	—

राग मारू

यह राग प्राचीन एवं सुप्रचलित है । १४ वीं शताद्धीमें 'असाईत' ठाकर–रचित लोकनाटच 'भवाई'वेशों के गीतो में भी यह राग गाया जाता था । गुजरात के भक्तकवि नरसिंह के पदों में भी यह राग का उलेख प्राप्त होता है । पश्चात् इस राग की मूल परम्परा अष्टछाप के समय में ही दृष्टिगोचर होती हैं । इस परम्परानुसार हवेलीसंगीत में आज भी यह राग गाया जाता है । आश्विन शुल्क ७ से दशेरा तक भोग–सन्धया के दर्शन में गाये जाने वाले कडखा के पद के एवम हिंडरो के होरी के तथा जन्माष्टमी ढाढ़ी के इत्यादि पदोंमें आज भी कीर्तन गाये जाते हैं । पुष्टिमार्ग को ही इस राग की परम्परा सुरक्षित रखनेका श्रेय कहा जाय तो उचित हैं ।

प्रातःकालीन 'परज' राग इसे मिलता झूलता है तथापि भेद स्पष्ट है । दोनों के बादी संवादी भिन्न हैं । परज में शुद्ध मध्यम का प्रयोग ध॒पगमग होता है । इस राग में सा, ग,मप, म॑, पध, होगा । प्रकार शुद्ध मध्यम का अलेप प्रयोग किया जाता है । निषाद से तीव्र मध्यम की मींड रंजक होती है । आरोह में रीषभ पंचम अल्प है । थाट पूर्वी है । वादी स्वर प और सांवादी सा है । जाति सम्पूर्ण है । दिन के चतुर्थ प्रहर में गाया जाता है । कोई मारवा थाट भी मामते हैं किन्तु आरोह में कहीं कहीं धैवत् स्वर शुद्ध धैवत की ओर झूकतासा रहता है अतः मारवा थाट मानना उचित नहीं है ।

आरोहावरोह :–सा, ग, म॑ध॒, नि, सां । सां नि ध॒प, म॑, धनि, म॑ग, रेसा

स्वरविस्तारः–(१) सा, ग, मप, धमप, धनि धप, सां, निध, प, मध नि,

मग रे सा.

(२) मगमप, ध निसा निधप, सां रें निसां, निधप, धनि,

म ग रेसा.

(३) म धनि, सां, सांरें निसां, गं, मं गं रें सां, निध नि,

मग रे सा.

(४) साग, मध, नि, धप, निसां, गं, मंगं रेंसां धनि, रें

निध, प; मधनि ध, प, म ग, रे सा.

राग मारू–ताल त्रिताल (मात्रा आठ)

हिंडोरे झूलत बंसीवाला । मधुवन सघन कदंवकी डारें झूलत गोपाला ॥१॥ कंचन खंभ सुभग चहुंडांडी पटुली परम रसाला । स्वेतबिछोना बिछायो तापर बैठे मदनगोपाला ॥२॥ झूलनकों आईं ब्रजवनिता बोलत वचन रसाला । 'नंददास' नंदनंदन मुरली सुन मग्न होत ब्रजबाला ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	—ग	गम	धनि	सांरें	सांनि	धप	मप	ध
झू	ऽल	तबं	ऽसी	ऽवा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ऽ
सां	—नि	धप	धप	—म	—प	धम	गरे	सा
झू	ऽल	तबं	ऽसी	ऽवा	ऽऽ	ऽला	ऽऽ	ऽ

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
मं	गमं	धनि	निसां	सांसां	रंसां	रेंनि	धनि	—
म	धुव	नस	घन	कदं	बकी	ऽडा	ऽरें	ऽ
म	—ग	गमं	धनि	सांसां	—नि	धप	मप	ध
झू	—ल	तझु	कत	गोपा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ऽ

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
मं	—ग	मंप	—मं	धनि	निसां	निध	पप	ध
कं	ऽच	नखं	ऽभ	सुभ	गच	हुंडां	ऽडी	ऽ
नि	निसां	रेंसां	निध	पम	—प	निम	गरे	सा
प	डुली	ऽप	रम	रसा	ऽऽ	ऽला	ऽऽ	ऽ

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
नि	रेंगं	गंमं	गंरें	सांसां	रेंसां	रेंनि	धनि	नि
स्वे	ऽत	बिछो	ऽना	बिछा	ऽयो	ऽता	ऽप	र
म	—ग	—मं	धनि	सांरें	सांनि	धप	मप	ध
बे	ऽठे	ऽम	दन	गोपा	ऽला	हिंडो	ऽरे	ड़

राग मारु—ताल चर्चरी

आज रघुवीरको वीर आयो ।
जारि लंका सकल मारि राक्षस वहुत,
सीय—सुधि ले कुसल फिर सिधायो ॥१॥
कहत मंदोदरी सुनहो दसकंध पिय,
बडो अपमान करि गयो तेरो ।
अजहु मन समझिके मूढ मिल रामसों,
'सूर' मतिमंद कह्यो मान मेरो ॥२॥

स्थायी

×			२		०		३		
सां	—	गम	ग	म	प	—	ध̲	म॑	ध̲
आ	ऽ	जऽ	र	घु	वी	—	र	को	—
नि	सां	नि	ध	ऽ	प	—	म	ग	—
वी	ऽ	र	आ	ऽ	यो	—	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

×			२		०		३		
नि	सां	गं	गं	मं॑	गं	रें	सां	सां	सां
जा	ऽ	रि	लं	ऽ	का	ऽ	स	क	ल
सां	—	सां	सां	—	नि	ध̲	ध	नि	नि
मा	ऽ	रि	रा	ऽ	क्ष	स	ब	हु	त

म॑	ग	ग	म॑	ध॒	नि	सां	सां	सां	सां
सी	ऽ	य	सु	धि	ले	ऽ	कु	स	ल
सां	रे॒ं	सा	नि	सां	नि	ध॒	प	म॑	ध॒
फि	र	सि	धा	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

×			२		०		३		
नि	सां	नि	ध॒	—	प	—	ध॒	म॑	ध॒
क	ह	त	मं	ऽ	दो	ऽ	द	री	ऽ
नि	नि	नि	सां	सां	नि	सां	नि	ध॒	प
सु	न	हु	द	स	कं	ऽ	ध	पि	य
सां	सां	नि	सां	—	नि	ध॒	प	—	—
ब	डो	अ	प	ऽ	मा	ऽ	न	ऽ	ऽ
म॑	म॑	प	ध॒	प	म॑	ते	म॑ग	रे॒	सां
क	रि	ध	यो	ऽ	ते	ऽ	रोऽ	ऽ	ऽ

राग मारु—ताल धमार

कुष्णजनम सुनि अपने पतिसों, हँसि ढाढिन यों बोली जू ।
जाउ जाउ तुम नंद नृपतिकें दानकोटरी खोली जू ॥१॥
तुमकों मिलेगो बागो चीरा, अरु दच्छना भरि झोरी जू ॥
हमकों लैयो नखसिख गेहनो, जेहर तेहर जोरी जू ॥२॥

लैयो कंत जुगतिसों लैयो, हम चढिवेको डोली जू ।
छोटीसी मेंसि सुवन सींगनकी, टहल करनकों गोली जू ॥३॥
साज सहित एक घुडिला लैयो, गैयां दूध अतोली जू ।
सुंदरसो एक हस्ती लैयो, हस्तिनि संग अमोली जू ॥४॥
सिज्या सहित एक दुलिया लैयो, ओर पाननकी ढोली जू ।
बीरी करि करि मोहि खवावै, लैयो संग तमोली जू ॥५॥
जनम जनम काहूके आगें, फिरि नहि मांडों झोली जू ।
'नंददास' नंदरायको ढाढी, भयो अजाचक टोली जू ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सा	–	–	ग	–	ग	म	प	प	–	म॑	–	प	ध̲
कृ	–	–	ष्ण	–	ज	–	न	म	–	सु	–	नि	–
नि	नि	–	सां	नि	सां	नि	ध̲	–	–	प	–	–	–
अ	प	–	ने	–	–	प	ति	–	–	सों	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	रें̲	–	नि	सां	नि	ध̲	प	प	ध̲
ह	सि	–	ढी	–	–	–	ढि	न	–	मु	–	ख	–
म॑	–	–	ध̲	–	नि	–	म॑	ग	–	म॑	ग	रे̲	सा
बो	–	–	ली	–	–	–	जू	–	–	–	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
नि	सां	–	गं	–	गं	–	म॑ं	गं	–	रें̲	–	सां	–
जा	–	–	उ	–	रे	–	जा	उ	–	तु	–	म	–

सां	—	—	सां	—	सां	—	नि॒	ध॒	—	नि	—	—	—
नं	—	—	द	—	नृ	—	प	ति	—	के	—	—	—
म॑	ग	—	ग	—	ग	—	म॑	ध॒	—	नि	—	सां	—
दा	—	—	न	—	को	—	—	ट		री	—	—	—
सां	—	—	नि	ध॒	प	—	म॑	ग	—	म॑	ध॒	नि	सां
खो	—	—	ली	—	—	—	जू	—	—	—	—	—	—
रें॒	सां	—	नि	—	ध॒	—	प	ध॒	—	म॑	—	प	ध॒
कृ	—	—	ष्ण	—	ज	—	न	म	—	सु	—	नि	—

संचारी

×					२		०			३			
प	म	—	ग	—	ग	म	प	—	—	म॑	—	प	ध॒
तु	म	—	कों	—	—	मि	ले	—	—	गे	—	—	—
नि	—	—	सां	नि	सां	नि	ध॒ वी	—	—	प	—	—	—
बा	—	—	गो		—	—	वी	—	-	रा	—	—	—
सां	रें॒	—	सां	—	रें॒	—	नि	सां	नि	ध॒	—	प	—
ओ	र	—	द	—	च्छ	—	ना	—	—	—	—	—	—
म॑	—	—	प	ध॒	नि	—	म॑	ग	—	म॑	ग	रे॒	सा
झो	—	—	री	—	—	—	जू	—	—	—	—	—	—

राग सोरठ, संक्षिप्त विवरण

सोरठ राग ग्रन्थोक्त एवं प्राचीन हैं । सौराष्ट्र का एक विभागीय प्रदेश आज भी सोरठ नामसे सुप्रसिद्ध हैं । इस राग का नाम प्रादेशिक नाम से सम्बन्धित माना जाता है । पुष्टिसम्प्रदाय की नित्यसेवा प्रणाली में यह राग उष्णकाल के अन्तिम दिनों में भोग तथा संध्यारतीसमय तक गाया जाता है, जो "सोरठ के पद" इस शीर्षक अन्तर्गत प्रसिद्ध है । तदुपरांत होरी हिंडोलादि के पद भी प्राप्त होते हैं ।

इस राग का थाट खमाज है । अतः इस राग के अवरोह में नि है । इस राग से मिलता हुआ देस राग प्रचार में है, किन्तु हवेलीसंगीत में सोरठ राग ही गाया जाता है । सोरठ में ऋषभ स्वर तथा देस में गान्धार स्वर प्रबल है । सौरठ में धमरे स्वर अंगभूत हैं । आरोह में ग ध स्वर वर्ज्य हैं । जांति औडव सम्पूर्ण है ।

गानसमय रात्रि का दूसरा प्रहर प्रचार में हैं । वादी ऋषभ और संवादी धैबत हैं । देस राग में वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ माना जाता हैं । देस और सोरठ समप्रकृतिक होने से प्रचार में एक दूसरे से मिले हुए दृष्टिगत होते हैं । देस में गन्धार स्पष्ट रहता हैं और सोरठ में यह स्वर ढँका हुआ रहता हैं । देस के आरोहमें गंधार और धैवत स्वर क्वचित् लिया जाता है जो सोरठके आरोहमें सर्वथा वर्ज्य है ।

स्वरविस्तार :—निसारे, मरे, पमरे, मपधमरे, रेपमरेसा, निरेसा । नि निधप, निधप, मपनिसां, निधप, मपधपधमरे, सा ।

ममप, निनि, सां, सां, निसांसां, निसांरें, मंमंरें, सां, निसांरें मंरेंरेंनि सां, निसांरें सांनिधप, धधप, मपध, धप, धमरे, रेंमंरेंसां, निसां, मपनिसां, रें निधप, धमरे, रेसा ।

राग सोरठ-ताल तीव्रा

देखरी देख आननचंद ।
मुदित चित्त चकोर प्लावित नेन कुमुदिनि वृंद ॥१॥
विपिन नभतें प्रगट संध्यासमय दरसन देत ।
मध्य उडुगन सखा संगही, गोधन जलद समेत ॥२॥
क्रीडत घोख तडाग मनजु मराल 'सूरजदास' ।
एक रसना कहि सके को, रंक विविध विलास ॥३॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	सां	—	सां	रें	नि	ध	प	ध	म	रे
दे	—	ख	री	दे	—	ख	आ	—	न	न	चं	—	द
							परे	म					
सा	रे	म	प	नि	ध	प	प	—	ध	म	रे	—	सा
											म	रे	सा
दे	—	ख	री	दे	—	ख	आ	—	न	न	चं	—	द

अन्तरा

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	म	म	प	नि	—	नि	नि	सां	—	सां
दे	—	ख	री	मु	दि	त	चि	—	त्त	च	को	—	र
नि	सां	रें	रें	नि	ध	पध	नि	नि	सां	रें	नि	ध	प
प्ला	—	वि	त	ने	—	न—	कु	मु	दि	नि	वृं	—	द

संचारी

२		३		×			२		३		×		
म	रे	म	प	म	म	म	रे	रे	म	प	नि	ध	प
दे	—	ख	री	वि	पि	न	न	भ	तें	—	प्र	ग	ट
प	—	प	—	नि	सां	रें	नि	ध	म	प	धप	प	म
सं	—	ध्या	—	स	म	य	द	र	स	न	दे–	—	—
रे	—	नि	सा										
—	—	त	—										

राग सोरठ—ताल त्रिताल

मैया मेरी कांवर कोन लई ।
गाय चरावन जात वृंदावन, खिरकमें भाज गई ॥१॥
एक कहे हम कावरि देखि सुरभि खाइ गई ।
एक कहे तेरी कारी कामरियां, जमुनामें जात बही ॥२॥
एक कहे नाचो मेरे आगें, कांवरि देहों नई ।
'सूरदास'प्रभु जसुमति आगे असुवन धार बही ॥३॥

स्थायी

०		३		×		२		०		३		×		२	
म	रे	म	प	निसां	रें	नि	धप	ध	म	मप	ध	म	—	रे	—
मै	या	मो	री	कां–	—	व	र–	को	—	न–	ल	ई	—	—	—

अन्तरा

०		३		×		२		०		३		×		२	
म	—	म	प	नि	—	नि	नि	सां	—	सां	सां	निसां	रें	रें	रेग
गा	—	य	च	रा	—	व	न	जा	—	त	वृं	दा–	व	—	न–

— धनि|प ध|नि —|सां सां|निसां रेंसां|निध पम|म रे|म प
— खिर|क में|भा —|ज ग|ई— ——|—— ——|मै या|मो : री

संचारी

० ३ × २ ० ३ × २
— प|प प|मप ध|म म|म रे|म प|मप नि|ध प
— ए|क क|हे— —|ह म|कां —|व रि|दे— —|खी —
नि नि|सां —|नि ध|म प|मप धप|म —|रे —|नि सा
सु र|भि —|खा —|इ ग|ई— —|— —|— —|— —

आभोग

० ३ × २ ० ३ × २
म —|म प|नि —|— निसां|रें रेंगं|रें सां|रें नि|सां —
ए —|क क|हे —|— तेरी|का ——|री कां|व रि|यां —
— धनि|प ध|नि —|सां सां|निसां रेंसां|निध पम|म रे|म प
— जमु|ना में|जा —|त व|हीं— ——|—— ——|मै या|मो री

संचारी

० ३ × २ ० ३ × २
— प|प प|पध पम|म म|म रे|म प|मप निध|प —
— ए|क क|हे— ——|ना —|चो —|मे रे|आ— ——|गें —

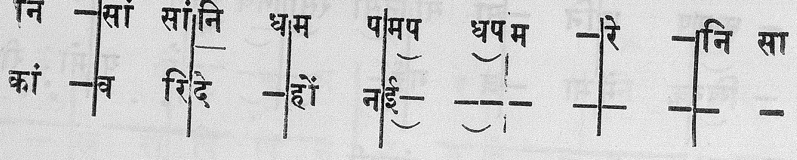
नि —सां सांनि धम पमप धपम —रे —नि सा
कां —व रिदे —हों नई— ——— —— —— —

आभोग

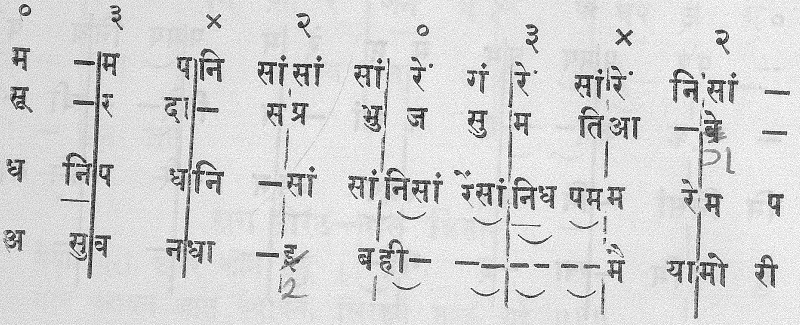
० ३ × २ ० ३ × २
म —म पनि सांसां सां रें गं रें सांरें निसां —
सू —र दा— सप्र भु ज सु म तिआ —बे —
ध निप धनि —सां सांनिसां रेंसां निध पमम रेम प
अ सुव नधा —इ बही— ——— ——मै यामो री

राग सोरठ—ताल चम्पक (ध्रुव आडाचौताल)

झूलत सांवरे संग गोरी ।
अमितरूप गुन सहज माधुरी सोभासिंधु झकोरी ॥१॥
इत सिरमोर मुकुटकी लटकन उतबेंदी सिर रोरी ।
कुंडललोल कपोलन झलकत उतहिं बनी कचडोरी ॥२॥
इत उत बेसरके मुक्तासों चोंप वढी अति जोरी ।
"रसिकप्रीतम" वल्लभ कटाच्छ छबि हाव भाव चित्त चोरी ॥३॥

स्थायी

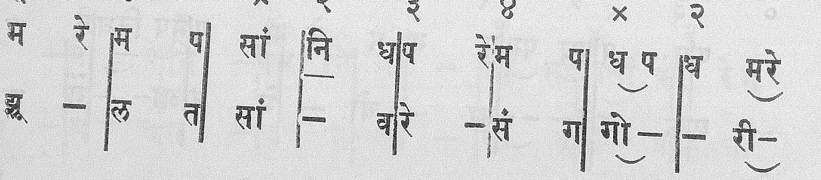
३ ४ × २ ३ ४ × २
म रेम प सां नि धप रेम प धप ध मरे
झू —ल त सां — वरे —सं ग गो— — री—

अन्तरा

×	२	३	४		×	२		३		४	
मं	मं	मंमं	रेंरें	रें	सां	नि	सां	निसां	रें	रें	रें
अ	मि	तरु	पगु	न	स	ह	ज	मा—	—	धु	री
नि	ध	पधनि	—सां	सां	निसां	रेंसां	धप	म	रे	म	प
सो	भा	——सि	—धु	झ	को—	——	री—	झू	—	ल	ब

संचारी

×	२	३	४		×	२		३		४	
मरे	म	मप	—म	प	म	प	निसां	नि	ध	प	प
उत	ही	बनी	—क	च	डो	—	——	री	—	—	—
सांनि	सां	रेनि	धम	प	ध	प	ध	म	—	रे	सा
उत	ही	बनी	—क	च	डो	—	—	री	—	—	—

राग—सोरठ, ताल—धमार

पौढे हरि राधिका के गेह।
नवलधाम नवलसय्या नवल बाढयो नेह।
नवलसुंदर नवन जोंबन नवल बरखत मेह।
'कृष्णदास' त्रैलोकनागर नवल स्याम सनेह।

स्थायी

३				×					२		०		
मरे	म	प	नि	सां	—	नि	ध	म	प	ध	म	—	रे
पौ—	ढे	ह	रि	रा	—	धि	का	—	के	—	गे	—	ह

अन्तरा

×					२		०			३			
म	म	प	नि	—	—	नि	सां	सां	सां	निसां	रें	रें	—
न	व	ल	धा	—	—	म	न	व	ल	सै—	—	या	—
नि	ध	ध	निध	मप	निसां	रें	निध	पध	मरे	मरे	म	प	नि
न	व	ल	वा	——	ढयो	—	ने—	——	ह—	पौ—	ढे	ह	रि

संचारी

×					२		०			३			
म	म	म	प	—	प	प	म	म	प	धप	ध	म	प
न	व	ल	सुं	—	द	र	न	व	क	जो—	—	ब	न
सां	नि	ध	म	म	प	प	धप	ध	म	—	रे	ऩि	सा
न	व	ल	ब	र	ख	त	मे—	—	—	—	—	ह	—

राग मालव—संक्षिप्त विवरण

मालव एल प्राचीन राग है । यह आजकल व्यवहार में अप्रचलित हो गया है । पुष्टिसंप्रदाय के मन्दिरों में इस राग को माने की परम्परा आज भी विद्यमान है । ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी में यह राग प्रचार में था । महाकवि जयदेवने अपने प्रबन्धों में मालव राग का स्पष्ट उल्लेख किया हैं । जयदेव का समय बारहवीं शताब्दी है । उनकी रची मालव राग में अष्टपदी 'प्रलयपयोधिजलेधृतवातसवेदम्' आज भी पुष्टि-सम्प्रदाय में निश्चित उत्सवों पर गाई जाती है ।

चौदहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध गुजराती भक्त-कवि नरसिंह मेहता को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है। तत्पश्चात् अष्टछाप के समय इस राग का काफी प्रचार रहा। अष्टछाप के कीर्तनाचार्यों के अतिरिक्त स्वामी हरिदासजी एव हितहरिवंशजी के राधावल्लभ—संप्रदाय की शिष्य-परम्पराओं में भी राग मालव के पद-कीर्तन प्राप्त होते हैं। मालव राग भारतीय संगीत के अन्य घरानों में नहीं पाया जाना। इससे लगता है कि यह राग वैष्णव मन्दिरों तक ही सीमित रह गया था। आधुनिक खयाल-गायकों ने मालव राग का जो स्वरुप बताने का प्रयत्न किया, वह अष्टछाप-परम्परा के मालव राग से भिन्न है। ग्रन्थों में 'मालव कौशिक' राग का उल्लेख हैं, जिसको आज हम 'मालकौंस' कह सकते हैं। मालकौंस के स्वरों को दृष्टिगत रखते हुए 'मालव' और 'कौशिक' को पृथक् समझना और तब मालव का स्वरूप मालकौंस के स्वरों पर आधारित करना उचित होगा। 'संगीत' विशेषांक सन् १९६२ के पृष्ठ ११३ पर मालव राग (ताल : दादरा) की जो स्वरलिपि दी गई है, उसमें स्वर मालकौंस के समान ही बताए गए हैं। मालकौंस के स्वरों पर आधारित मालव को बताना पारम्परिक न होकर आधुनिक खयाल-रचयिताओं की कल्पना-मात्र है। अष्टछाप-परम्परा के मालव राग में 'म॑—ध' की स्वर-संगति का प्रयोग होता हैं। इस परम्परा का प्रातर्गेय राग बिभास (अर्वाचीन देसकार) इस राग से मिलता-जूलता है। किन्तु थाट, वादी-संवादी, समय एवं चलन आदि की भिन्नता के कारण दोनों पृथक् हो जाते हैं। सायंकाल के बाद गाये जाने वाले राग भूपाली तथा मालव के स्वरूप में पर्याप्त साम्य है। दोनों के थाट और जाति समान है, फिर भी आरोह में ऋषभ वर्ज्य करके मध्यम तीव्र का प्रयोग मालव को भूपाली से पृथक् कर देता हैं। मालव उत्तरांगप्रधान है। गायक

को भूपाली तथा विभास से मालव को बचाने के लिए प्रयत्नशील रहना पड़ता है ।

मालव राग का थाट कल्याण है । आरोह में ऋषभ तथा निषाद एवं अवरोह में निषाद तथा मध्यम वर्ज्य होने से इसकी जाति औडव-औडव है । तीव्र मध्यम का प्रयोग है, फिर भी शुद्ध मध्यम का विवादी के रूप में दोनों गान्धारों के बीच किया हुआ किंचित् प्रयोग रंजकता में अभिवृद्धि करता है । गाने का समय दिन का चतुर्थ प्रहर है, परंतु इसकी कालावधि चतुर्थ प्रहर से लेकर मध्य रात्रि तक मानी जाती है । वादी स्वर गान्धार और संवादी स्वर धैवत माना जाता है । पंचम से गांधार और षड्ज (तार) से धैवत पर आते समय कभी कभी मींड़ ली जाती है । उत्तरांग में अधिक चलन होने से पंचम और तार-षड्ज का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है । गान्धार पर ऋषभ का कण सौंदर्यवर्धक है ।

आरोहावरोह-स्वरूप—सा, ग, प, ध, मध सां । सां ध, प ग, रे सा ।

पकड—सां, ध रें सां, ध प ग, प, ग रेसा ।

चलन—पग, गरे, सा, गरे, गप, मध, प, गरे, सा । गपधप, मध सांसाधप, गमगरे, गपधमधसां । गंरेंसांधरेंसां, सांधप, गरेग, पग, मधसां ।

अष्टछाप–परम्परा में हिंडोला–रास, माहात्म्य तथा बधाई के पदों में प्रायः मालव का प्रयोग है । यह राग अधिकतर सम्प्रदाय की सायंकालीन सेवा-प्रणालियों में गाया जाता है । शरत्पूर्णिमा की शाम का रास के दर्शन के समय मालव राग में निबद्ध जिन पदों को कीर्तनरूप में गाया जाता है, उनमें से एक पद यहाँ उदाहरणार्थ स्वरलिपि-सहित प्रस्तुत है । इस पद की रचना त्रिपुट ताल में है । त्रिपुट ताल का स्वरूप —'१००' अर्थात् ४+२+२ है । इस प्रकार यह आठ मात्रा की

प्राचीन ताल हैं, जिसका स्वरूप आज त्रिताल(तीनताल) ने ग्रहण कर लिया है। गत शताब्दी तक अष्टछाप-परंपरा में त्रिपुट ताल का व्यवहार होता रहा, किन्तु आज हमारे कीर्तन—गायक त्रिताल में गाने कीं चेष्टा कर रहे हैं । अतः लेखक के विनम्र मत से प्राचीन पारम्परिक तालों का संरक्षण भी आवश्यक हैं ।

राग मालव—ताल त्रिपुटे

रास बिलास गहें करपल्लव, एक एक भुजा ग्रींवा मेली ।
द्वे द्वे गोपी बिच बिच माधव, निर्तत संग सहेली ॥१॥
टूटि परी मोतिन की माला, ढूंढत फिरति सकल ग्वाली ।
मुकुलित कुसुममाल कच विगलित, निरखि हसे वनमाली ॥२॥
सरद विमल नभ चंद बिराजत, निर्तत नंदकिसोरा ।
'परमानंद'प्रभु बदन सुधानिधि भामिनी नेन चकोरा ॥३॥

स्थायी

×				२		३		×				२		३	
सां	ध	सां	सां	सां	–	ध	प	ग	–	ध	प	ग	रे	सा	सा
रा	–	स	वि	ला	–	स	ग	हे	–	क	र	प	–	ल्ल	व
गप	ग	ग	ग	ग	गम	ग	रे	ग	प	ध	सांरें	सां	–	ध	मध
ए	क	ए	क	भु	जा–	–	ग्री	वा	–	मे	––	ली	–	–	––

अन्तरा

×				२		३		×				२		३	
गं	–	गं	–	गं	–	रें	–	सां	सां	रें	रें	सांरें	गंरें	सांध	सां
द्वे	–	द्वे	–	गो	–	पी	–	बि	च	बि	च	मा–	––	ध–	व

सां ध प प | ग गम | ग रे | ग प ध सांरें | सां — | ध मध
नि र त त | सं —— | ग स | हे — — —— | ली — | — ——

संचारी

× २ ३ × २ ३
सां ध रें सां | सां — | धप मप | ग ग प — | ग रें | सा —
टू — ट प | री — | मो— —— | ति न की — | मा — | ला —
ग — ग ग | ग गम | ग रे | ग प ध मध | सां —— | —
हूं — ढ त | फि र— | त स | क ल ग्वा —— | ला —— | —

आभोग

× २ ३ × २ ३
गं गं गं गं | रें रें | रें सां | — ध सां रें | गं रें | सां सां
मु कु लि त | कु सु | म मा | — ल क च | वि ग | लि त
सां ध प प | ग गम | ग रे | ग प ध धरें | सां — | ध मध
नि र ख हँ | से —— | हे — | ब न मा —— | ली — | — ——

राग मालव–ताल धमार

पद्म धर्यो जनताप निवारन ।
चक्र सुदर्सन धर्यो कमल कर, भक्तनकी रक्षाके कारन ॥१॥
संख धर्यो रिपु उपर बिदारन, गदा धरी दुस्टन सिंघारन ।
चारों भुजा चारो आयुध धरि, नारायन भुवि भार उतारन ॥२॥
दीनानाथ दयाल जगतगुरु, आर्ति हरन भक्तन चिंतामनि ।
'परमानंददास' को ठाकुर, यह अवसर छांडो जिनि ।

स्थायी

×					२		०			३			
सां	—	—	ध	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	—
प	—	—	द्म	—	ध	—	यों	—	—	ज	—	न	—
ग	—	—	ध	—	प	—	ग	रे	—	सा	—	सा	—
ता	—	—	प	—	नि	—	वा	—	—	र	—	न	—
ग	—	—	ग	—	ग	—	ग	—	म	ग	—	रे	—
प	—	—	द्म	—	ध	—	यों	—	—	ज	—	न	—
ग	प	—	ध	—	रे	—	सां	—	—	सां	—	म॑	ध
ता	—	—	प	—	नि	—	व	—	—	र	—	न	—

अंतरा

×					२		०			३			
गं	—	—	गं	—	—	गं	गं	—	—	गं	—	पं	—
च	—	—	क्र	—	—	सु	द	—	—	र्श	—	न	—
गं	रें	—	—	—	सां	—	रें	गं	रें	सां	ध	सां	—
ध	यों	—	—	—	क	—	म	ल	—	क	—	र	—
ध	प	—	ग	—	ग	—	ग	—	म	ग	—	रे	—
भ	—	—	क्त	—	न	—	की	—	—	र	—	—	—
ग	प	—	ध	—	रे	—	सां	—	—	ध	प	म॑	ध
क्षा	—	—	के	—	—	—	का	—	—	र	—	न	—

संचारी

×					२		०			३			
सां	—	—	सां	—	सां	—	ध	—	—	प	—	प	—
शं	—	—	ख	—	ध	—	र्यो	—	—	री	—	पु	—

म ग — ध —	प —	ग रे —	सा — सा —
उ द — र —	वि —	दा — —	र — न —
ग ग — — —	ग —	ग — म	ग — रे —
ग दा — — —	ध —	री — —	दु — — —
ग प — ध —	प —	ग रे —	सा ध़ सा —
छ न — सि —	— —	हा — —	र — न —

राग जंगला–संक्षिप्त विवरण

इस राग को जंगुला भी कहते हैं। पुष्टिसम्प्रदाय के मन्दिरो में इस राग के पद प्रायः सांझी के तथा क्वचित् हिंडोला के भाव के भी प्राप्त होते हैं। इस राग के पद बहुत कम संख्या में हैं। रासधारीयों के द्वारा सम्प्रदाय में श्रीहरिरायजी के उत्तर समय में प्रचार होना संभवित है। जो झींझोटी-मिश्र धून जैसा प्रकार दिखाई देता है।

'जंगला'–'झींझोटी' राग अधिकतर दादरा ठुमरी आदि गानशैली में दृष्टिगत होता है। पं. भातखण्डेजीने जंगला राग का जो उल्लेख किया हैं वह इस प्रकार से भिन्न है, जो भैरव और आसावरी थाट का बताया गया है। प्राप्त शैली के आधार पर इस राग का विवरण निम्न प्रकार हो सकता है।

थाट खमाज, जाति — सम्पूर्ण, आरोह में निषाद शुद्ध, समय दिन का अन्तिम प्रहर (सम्प्रदाय में यह राग भोग तथा संध्या समय में गाया जाता है) कहा जायगा।

स्वरविस्तार :— सा रे नि सा, रे, रेग, म प, म ग रे सा नि ध प, नि नि ध म, ग, मगरेसा, रे, रेगमप, मग, सारेनि, प प निसा, रेग, ग—सा. ग, गम, गगसा, रेगप, सग, रेग, निनि, सांसां.

सांझी का पद

राग जंगला–ताल त्रिताल (मात्रा ८)

अरी तुम कोन हो री बनमें फुलवा बीनत हारी।
नेह–नगरको बन्यो बगीचा, फूल रही फुलवारी ॥१॥

कृष्णचंद्र बनवारी आये, मुख क्यों न बोले सुकुमारी ।
तुम तो नंद महर के ढोटा, हौं ब्रखभानदुलारी ॥२॥
या बनमें हम सदा बसत है, हम ही करत रखवारी ॥२॥
बिन बूके बीनत हो फुलवा, जोवन मदमत्त वारी ॥३॥
तब ललिता एक मतौ उपायो, सेंन बताइ प्यारी ।
'सूरदास'प्रभु रसबस कीने, बिरहवेदना टारी ॥४॥

स्थायी

						ग	गरेनि	सा
						अ	रीऽतु	म
×	२	०	३	×	२	०	३	
रे	——	गरे	गम	पम	—ग	रेसा	रेनि	—
को	ऽऽ	नहो	ऽऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽब	नमें	ऽ
प	पनि	—सा	—रे	गग	—सा	——	——	—
फु	लवा	ऽबी	ऽन	तहा	ऽरी	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	रेम	मप	पप	—म	मप	पमप	धपम	ग
ने	—ह	नग	रको	ऽब	न्यो—	बगीऽ	ऽऽचा	ऽ
—	निनि	निसां	—नि	धपग	पम	गम	गरेनि	सा
—	फूल	रही	ऽफु	लऽवा	ऽरी	ऽअ	रीऽतु	म

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
नि़	—नि़	नि़सा	सानि़	सारे	—रे	—रे	गम	—
कृ	ऽष्ण	चंऽ	द्रब	नवा	ऽरी	ऽआ	ऽये	ऽ
प	धम	मग	गरेसा	रेनि़	——	—सा	——	—
मु	खक्यों	नवो	लेऽसु	कुमा	ऽऽ	ऽरी	ऽऽ	ऽ

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	पनि	—नि	—नि	निसां	सांसां	—रें	गंसां	—
तु	मतो	ऽनं	ऽद	मह	रके	ऽढो	ऽटा	ऽ
नि	निसां	सांनि	धप	धग	पम	गम	गरेनि़	सा
हों	ऽभ्र	खभा	ऽन	दुला	ऽरी	ऽअ	रीऽतु	म

क्रमशः संचारी आभोगनुसार ।

राग हमीर—संक्षिप्त विवरण

हमीर राग कल्याण का क्षेत्र होने से 'हमीर—कल्याण' भी कहा जाता हैं। कुछ ग्रन्थों मे उसका 'शंकराभरण' मेल कहा है। इसमें दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है तथापि केवल शुद्ध मध्यम के प्रयोग से भी हमीर का स्वरूप भंग नहीं होता ऐसी एक मान्यता होने के कारण शुद्ध मध्यम का हमीर और दोनों मध्यमों का हमीर—कल्याण कहने का रिवाज है।

शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम का प्रमाण भलें ही कुछ कम हो, किन्तु हमारी अनेक चीजों में कल्याण का ही अंग विशेष हैं, जो अधिकतर अवरोह में और उत्तरांग में दिखाई देता हैं।

हमारे मन्दिरों में यह राग उष्ण ऋतु में अक्षय-तृतीया से संध्यारती में तथा कभी कभी शयन के दर्शन समय भी लगभग ४० दिन तक गाया जाता है। तद्‌अतिरिक्त वधाई—व्यौहारों में इन्ही दर्शनों के समय विशेष रूप से गाने की प्रथा है।

राग-विवरण :-

“दो मध्यम, सब ही तीवर, प्रथम प्रहर निसि जान
वादि ध, संवादि ग राग हमीर बरवान (रा. य.)

थाट कल्याण, स्वर दोनों मध्यम और शेष शुद्ध हैं जाति सम्पूर्ण है। वादी स्वर धैवत है। संवादी स्वर गान्धार है। गानसमय रात्रि का प्रथम प्रहर माना जाता है। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह दोनों में किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग केवल आरोह में ही होता है। अवरोह में गान्धार स्वर वक्र है। ख्याल गायक लोग इस नियम को जलद तानें लेते समय क्षम्य मानते हैं तथा क्वचित् कोमल निषाद का प्रयोग ‘धनिप’ इस प्रकार करते हैं।

कोई इस राग का वादी पंचम भी मानते हैं। हमीर में कोई आरोह में ऋषभ और पंचम वर्ज्य करते हैं और कोई केवल पंचम वर्ज्य कर के गाते हैं, किन्तु यह मान्यता हमारी अष्टछापपरम्परा में नहीं मानी जाती है। क्यों कि हमारे यहां अधिकतउ हमीर कल्याण गाया जाता है।

पकड :— सा, रेसा, गमध,

आरोहावरोह :– सा, गमध, निध, सां सांनिधप, म॑प, गमध, प, ग म रे सा.

स्वर-विस्तार :-

(१) सा, रेसा, गमध, प, ग, मरे, गम धप, गमरेसा.

(२) गमध, निध, सांनिधप, म॑ प निध, प, म॑प ध नि सां नि ध प, गम, ध, प, गमरेसा.

(३) पपसां, सांध, सांरेंसां, गंमंरेंसां, निध, निधप, म॑प निध, प, गम रे, सारेसा.

राग हमीर—ताल चौताल

गये पाप ताप दूर देखन दरस परस चरतें।
हो तो एक पतित तिहारो पतितपावन बिरद हौं तुम जगत के उद्धरन ।
स्तुति सेस कर न सके सकल कला—गुननिधान
जानत हौं तिहारी सब बिधि अनुसरन ।
'छीतस्वामी' गिरिवरधर तैसे ही श्री विट्ठलेश
हौं तो तिहारी जनम जनम सरन ।।२।।

स्थायी

									प	ग	म
									ग	ये	—
×		०		२		०		३		४	
ध	—	प	प	—	प	ग	—	म	रे	सा	सा
पा	—	प	ता	—	प	दू	—	र	दे	ख	त
सां	सां	सां	ध	नि	नि	सां	ध	प	प	ग	म
द	र	स	प	र	स	च	र	न	ग	—	ये

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
हौं	—	तो	ए	क	प	ति	त	ति	हा	—	रो

ध	ध	ध	सां	नि	रें	गं	रें	सां	ध	प	प
प	ति	त	पा	व	न	बि	र	द	हो	तु	म
सां	गंमं	रे	सां	ध	रें	सां	नि	धप,	प	ग	म
ज	ग—	त	के	—	उ	द्ध	र	—न,	ग	—	ये

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	—	प	—	प	ध	नि	ध	प	ध	प
स्तु	ति	—	से	—	स	क	र	न	स	के	—
सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि	ध	प	—	प
स	क	ल	क	ला	—	गु	न	नि	धा	—	न
ध	—	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	सा
जा	—	न	त	हों	—	—	—	ति	हा	—	री
सा	म	ग	प	म॑	धि	नि	ध	प	गम	रे	सा
स	ब	बि	धि	—	अ	नु	—	—	स	र	न

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	—	सां	—	सां	रें	रें	सां	सां	सां	सां
छी	त	—	स्वा	—	मी	गि	रि	व	र	ध	र
ध	—	ध	नि	—	रें	गं	रें	सां	ध	प	प
ते	—	से	ई	—	श्री	वि	—	ठ	ले	—	स

सां —	— गं	— गं	मं रें	— सां	— —
हों —	— तो	— ति	हा —	— री	— —
रें सां	नि ध	नि रें	सां नि	ध, प	ग म
ज न	म ज	न म	स र	न, ग	— ये

राग हमीर—ताल धमार

गिरिधर सब ही अंग को बाँकौ ।
91
बांकी चाल चलत गोकुल में, छेल छबीलो काको ॥१॥
बांकी भौंह चरनगति बांकी, बांको हिरदो जाको ।
'परमानंददास'को ठाकुर, कियो खोर ब्रज सांको ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३
सां सां नि ध नि	सां रें	सांनि ध प	म॑ प ग म
स ब ही अं —	ग को	बाँ— — को	गि रि ध र
ध ध प ग म	ध प	गम रे सा	पम॑ प ग म
स ब ही अं —	ग को	बां— — को	गि— रि ध र

अन्तरा

×	२	०	३
प प — सा —	सां सां	ध नि सांरें	सांनि सां ध प
बाँ की — चा —	ल च	ल त गो—	कु— ल में —
गंमं रें सांनि ध नि	सां रें	सांनि धनि धप	पम॑ प ग म
छे—ल छ— बी —	लो —	का— —— को—	गि— रि ध र

संचारी

×					२		०			३			
प	–	प	ध	–	प	प	गम	ध	म	गम	रे	सा	–
बाँ	–	की	भौं	–	ह	च	रन	ग	ति	बाँ–	–	की	–
सा	म	ग	प	प	ग	म	ध	–	प	गम	रे	सा	–
बां	को	–	हि	र	दो	–	ता	–	–	––	–	को	–

आभोग

×					२		०			३			
प	प	प	सां	–	सां	सांनि	धनि	सां	रें	सांनि	सां	ध	प
प	र	मा	नं	–	द	दा–	––	स	को	ठा–	–	कु	र
गंमं	रें	सां	ध	नि	सां	रें	सांनि	धनि	धप	मं	प	ग	म
कि-	यो	–	खो	र	ब्र	ज	सां–	––	को–	गि	रि	ध	र

राग हमीर–ताल तीव्रा

कहो जू कान्ह गैयां कित बिसरानी ।
कहां चराई ठहराई कोन बन, कहां पिवायो पानी ॥१॥

भई अवार बनमांज फिरत हो, बोलत कोऊ न पंछी बानी ।
"रसिक–प्रीतम" तुम झूले से फिरत हो, तिहारी बात में जानी ।

स्थायी

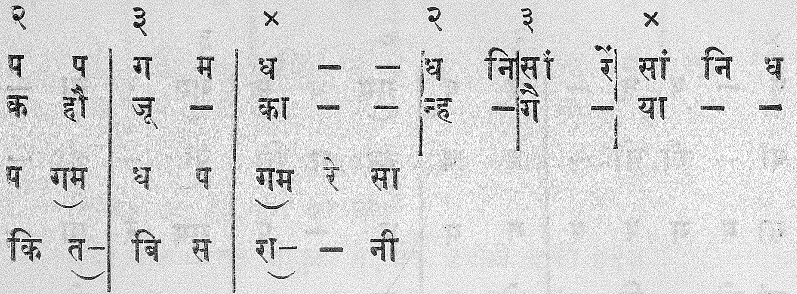
२ ३ × २ ३ ×
प प | ग म | ध — — | ध निसां रें | सां नि ध
क हौ | जू — | का — — | न्ह —गै — | या — —
प गम | ध प | गम रे सा
कि त– | बि स | रा– — नी

अन्तरा

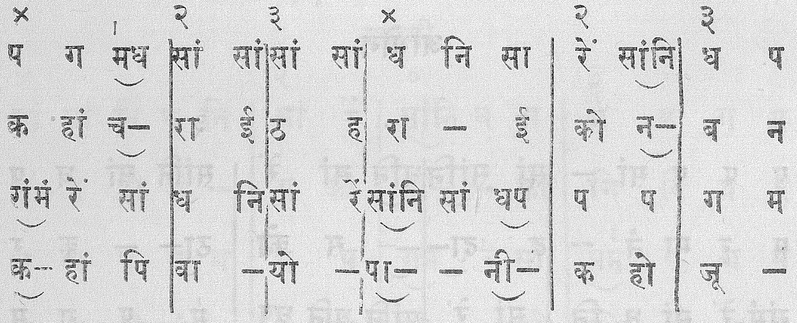
× २ ३ × २ ३
प ग मध | सां सां | सां सां | ध नि सा | रें सांनि | ध प
क हां च– | रा ई | ठ ह | रा — ई | को न– | ब न
गंमं रें सां | ध नि | सां रें | सांनि सां धप | प प | ग म
क– हां पि | वा —यो | —पा– — | नी– | क हो | जू —

राग यमन (ईमन कल्याण) संक्षिप्त विवरण

यमन राग कल्याण थाट का मुख्य एवं प्राचीन राग है। इसे 'ईमन' कहने का भी रिवाज हैं। पुष्टिसम्प्रदाय की कीर्तनप्रणाली के हस्तलिखित तथा प्रकाशित सभी ग्रन्थों मे 'ईमन' नाम का ही उल्लेख लिया गया है, यही नहीं, व्यवहार में भी 'ईमन' कहने का ही कीर्तनकारों मे परंपरागत रिवाज आज भी चालू है। कोई 'ईमन' शब्द को फारसी शब्द बताते हैं, किन्तु 'यमन' के स्थान पर सम्प्रदाय में फारसी शब्द का प्रयोग करना सम्प्रदाय की दृष्टि से असंभव है। क्यों कि सेवा में किसी भी विदेशी शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता। इस प्रकार कीर्तन सेवा में

भीं जो ईमन शब्द का प्रयोग किया गया है उसका कारण यह है कि व्रज भाषा में 'य' के स्थान पर 'ई' उच्चारण होता है अतः लिपि में भी संग्रहकारों ने यहीं परम्परा अपनाई होगी तद्नुसार हमने यहाँ ईमन नाम से ही इस राग की चर्चा करना उचित समझा है।

यमन नाम संस्कृत माना जाता है। किन्तु अष्टछाप की कीर्तन-सेवा के आरम्भ से ही 'यमन' के 'ईमन' नामकरण का प्रचार होना सम्भवित है। 'अमीर खुशरो से प्रचार मे आया, यह कहना हमारी समज में नहीं आता। दक्षिण संगीतपद्धति मे 'यमुना कल्याण' नामक राग है, जो इसे कुछ मिलता झूलता है ऐसा दाक्षिमणाय पंडितो का:कहना है। बहुत से लोग यमन और यमन–कल्याण को ए कही समजते हैं। तथा कुछ लोग यमन और यमन कल्याण भिन्न मानते हैं। दोनों गान्धारो के बीच क्वचित् शुद्ध मध्यम का प्रयोग करने से यमन–कल्याण यानि दोनों मध्यमों वाला यमन–कल्याण और विना तीव्र मध्यम वाला यमन है ऐसा भेद स्पष्ट रूप से समझा नहीं जाता। विवादी के नाते से भी क्वचित् शुद्ध मध्यम लगा सकता है।

हमारी नायक गोपाल की परम्परा के पाटन (उ. गु.) की श्रीमन्त सरकार की गादी के गायक उस्ताद मणिलाल माधवजी नायक तथा नायक छबीलदासजी का यह कहना था कि दोनों मध्यमों वाला ईमन ही प्राचीन समय में 'श्याम–कल्याण' समझा जाता था। आज का श्याम-कल्याण असलीं नहीं हैं। प्रचार के श्याम-कल्याण में यमन या कल्याण का स्वरूप कहां है, जो इमन-कल्याण में प्रगट होता है।

शुद्ध कल्याण से भिन्न यमन राग को कोई लोग कल्याण भी कहते हैं और यह साम के समय गाया जाता है, अतः ईमन यानि कल्याण में कहीं–कहीं शुद्ध मध्यम का वक्र रूप से प्रयोग करने से

श्याम–कल्याण कहा जाता था। इस प्रकार की मान्यता हवेलीसंगीत के वृद्ध गायक लोग भी मानते थे।

बम्बइ में गो श्री १०८ श्रीजीवनजी महाराज के समकालीन वृद्ध कलाकार वैष्णव श्रीविट्ठलदासजी शाह से मैंने जो श्याम–कल्याण राग का हिंडोरा सुना था उस प्रकार का ईमन कल्याण से मिलना झूलता था जिसके शब्द इस प्रकार हिंडोरें झूलत स्यामा स्याम गरजत घन चलत पवन सननननन' थे। सम्प्रदाय के लिखित कीर्तन संग्रहों में 'श्याम–कल्याण' राग के पद क्वचित् ही प्राप्त होते हैं। यदिक हीं नामोल्लेख प्राप्त हो तो वह आजकल के प्रचार का श्याम–कल्याण नहीं, किन्तु ईमन कल्याण का स्वरूप ही समजना चाहिए। अतः सम्प्रदाय का श्याम–कल्याण यही होने से हमनें यहां श्याम कल्याण की अलग चर्चा करना उचित नहीं समझकर इतना ही उल्लेख यहां किया है।

यह राग साधारण तथा लोकप्रिय है। सम्प्रदाय की कीर्तन प्रणाली में यह राग अधिकतर गाया जाता है। संध्यारती के बाद शयन–समय तथा दर्शन में गाये जाने वाले इस राग के अनेक पद प्राप्त होते हैं।

नित्यक्रम के अतिरिक्त हिंडोला, रास तथा होरी आदि त्यौहारों के भाव के पद भी उन दिनों मे इस राग के काफी पद गाये जाते है।

ईमन राग की शास्त्रीय माहिती इस प्रकार है।

(१) थाट—कल्याण (२) जाति—सम्पूर्ण (३) वादी गान्धार और संवादी निषाद (४) स्वर–मध्यम तीव्र और बाकी के शुद्ध है। (५) गानसमय—रात्रिका प्रथम प्रहर।

पकड–स्वर :— निरेग, रे, सा.

आरोहावरोह :— सारेग, मप, धनिसां। सांनिध, प, मग, रेसां.

स्वरविस्तार-(आलाप)

(१) सा—, निरेसा—, निरेग—, रेग—, पमग—, रेग—, परे—सा.

(२) सारेग—, रे—सा—निधप—निरे—, ग—रे—, पमग—रे—, निध—
पमग—रे—, प—रे, नि—सां ।

(३) सारेग मप—, गमप—, निधप मग मप—, सांनिधप—, निधप
मग मप—, ग—रे, प—रे—, निरेसा ।

(४) पग—, प—, धप—, सां—, सां—, निरेंसां—, निरेंगं रेंसां—
निरेंगंमगंरेंसां—, रेंसां—निधप मप निधप मग—,रे—, प–रे—,
निरेसा ।

(सम्प्रदाय में 'ईमन' को 'ईमन कल्याण' भी कहते हैं ।)

राग ईमन, ताल चर्चरी (प्राचीन अंग)

रुचिर पदकमल श्रीवल्लभाधीशके,
रेन ओर दिवस निज सिरसि धरिये ।
गहेत दृढ बांह जिहि कान्ह श्री नंदसुत,
पत्र फल पुस्प सेवानुसरिये ॥१॥
प्रेमभावतें निकट संतत रहत
राखि विस्वास व्रततें न टरिये ॥
श्रीविठ्ठल गिरिधरन, प्रकट लक्ष्मन सुवन,
भक्त के भवन में वास करिये ॥२॥

स्थायी

×			२		०		३		
नि	नि	ध	नि	ध	प	प	म	ग	—
रु	चि	र	प	द	क	म	ल	श्री	—

म॑	ग	म॑	प	रे	ग	रे	रे	सा	—
व	—	ह्ल	भा	—	धी	—	श	के	—
ध़	—	ऩि	रे	रे	ग	ग	म॑	ध	नि
रे	—	न	ओ	र	दिं	व	स	नि	ज
रें	नि	ध	नि	ध	प	—	ग	—	म॑
सि	र	सि	ध	रि	ये	—	—	—	—

अन्तरा

×			२		०		३		
प	ग	ग	मं	ध	सां	—	सां	सां	सां
ग	ह	त	ह	ढ	बां	—	—	जि	हिं
ध	—	ध	नि	रें	सां	रें	सां	ध	प
का	—	न्ह	श्री	—	नं	—	द	सु	त
नि	रें	गं	गं	रें	सां	—	ध	प	—
प	—	त्र	फ	ल	पु	—	स्प	से	—
ध	नि	ध	प	म॑	प	—	ग	—	म॑
वा	—	नु	स	रि	ये	—	—	—	—

संचारी

×			२		०		३		
प	—	प	मं	ध	नि	ध	प	प	—
प्रे	—	म	भा	—	—	—	व	तँ	—
नि	ध	प	प	—	प	म	ग	ग	ग
नि	क	ट	सं	—	त	त	र	ह	त

प	—	म॑	ग	म॑	ग	रे	सा	नि़	ध़
रा	—	खि	वि	—	स्वा	—	स	त्र	त
नि़	रे	ग	प	प	रे	—	सा	—	—
तैं	—	न	ट	रि	ये	—	—	—	—

राग ईमन (रास का पद) ताल चौताल

स्याम सजनी सरदरजनी पुलिन मध्य नृत्य नाट्य
तांत्रिगता त्रगता तिरप बंद करत कामिनी ।
गिडगिडान् गिडगिडान गिडि गिडि गिड गिड गिडान्
घिधिकिटता लाग दई झां झां झां झं नननन सुर उपंगिनी ।।१।।
स्याम को यह नाद भावे तां त्रिगता गति हि लावे,
तत थेई थेई शब्द उघटि, कोटिक कामिनी ।
कृष्णदास जस हि गावे, कर ताथेइ थेइ नचावे,
कां कृति कां कृति कां कृति कां कृति कर मृदंगिनी ।।२।।

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	ध	प	ग	म॑	ध	प	ग	रे	नि़रे	सा
स्या	—	म	स	ज	नी	स	र	द	र	ज—	नी
ध़	नि़	रे	ग	—	ग	प	रे	ग	रे	नि़रे	सा
पु	लि	न	म	—	ध्य	नृ	—	त्य	ना	——	ट्य
सा	—	रे	रे	ग	—	म॑	ग	रे	ग	म॑	ध
तां	—	त्र	ग	ता	—	त्र	ग	ता	ती	र	प

सां	—	नि	ध	प	प	ध	म॑	प	ग	म॑	ध
बं	—	द्	क	र	त	का	—	—	मि	नी	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	गग	मं	ध	सां	सांसां	सां	—	सां	ध	नि	ध
गि	डगी	डा	—न्	गि	डगी	डां	—न	गि	ड	गि	ड
नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	सां	नि	नि	ध	प
गि	ड	गि	ड	गि	डा	—	न्	घि	घि	कि	ट
प	—	ध	म॑	ग	रे	सा	—	नि़	रे	ग	रे
ता	—	ला	—	ग	द्	ई	—	झाँ	झाँ	झाँ	झं
ग	म॑	ध	नि	रें	सां	नि	ध	प	प	म॑	ध
न	न	न	न	सु	र	उ	पं	—	गि	नी	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	प	ग	म॑	ध	म॑	प	प	—	प
स्या	—	म	को	य	ह	ना	—	द्	भा	—	वे
म॑	—	ध	ध	म॑	ध	नि	नि	ध	ध	प	प
तां	—	त्रि	ग	ता	—	ग	ति	हि	ला	—	वे
नि	ध	नि	ध	प	प	ध	म॑	प	ग	रे	सा
त	त	थे	ई	थे	ई	स	—	ब्द	उ	घ	टि
नि़	रे	—	ग	—	ग	प	रे	ग	रे	सा	सा
को	—	—	टि	—	क	—	क	—	मि	नी	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	म॑	ध	म॑ध	सां	सां	सां	रें	सां	सां
कृ	—	ष्ण	दा	—	स—	ज	स	हि	गा	—	बे
सां	ध	नि	रें	गं	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प
क	र	ता	—	थे	ई	थे	ई	न	चा	—	बे
सां	—	नि	ध	नि	—	ध	प	ध	—	प	म॑
कां	—	कृ	ति	कां	—	कृ	ति	कां	—	कृ	ति
ग	—	म॑	ध	सां	सां	नि	ध	प	प	म॑	ध
कां	—	कृ	ति	क	र	मृ	दं	—	गि	ना	—

राग ईमन ताल चौताल

बलबल हों तनक तनक करडारों इन पर जे रहे निसदिन चरनन नेरे ।
जीवनमुक्त सदा तेही जन जो श्रीवल्लभनंदनके ही चेरे ।
तिनकी महिमा मोपें बरनी न जाई, जिन तनही हस हस हेरे ।
'चतुर' कहे श्री विठ्ठलनाथ प्रभुसों हमहु गिनयेजु तिनमें भले बुरे तोहि तेरे ।

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
सां	सां	नि	नि	ध	प	ध	नि	ध	प	—	प
ब	ल	ब	ल	—	हों	त	न	—	क	—	त
ध	प	—	म॑	ग	म॑	प	—	—	ग	—	रे
न	क	—	क	—	र	डा	—	—	रों	—	री
नि़	रे	ग	रे	सा	सा	नि़	ध़	प़	सा	—	रे
ई	न	—	प	—	र	जे	—	र	हे	—	नि

ग मं | ग मं | प प | रे ग | रे नि़ | रे सा
स दि | न — | च र | न न | — ने | — रे

अन्तरा

× | ० | २ | ० | ३ | ४
प — | ग प | ध प | सां — | — सां | — —
जी — | — व | — न | सु — | — क्त | — —

नि — | ध सां | — रें | गं रे | नि नि | ध प
स — | — दा | — ते | ही — | — ज | — न

ब ग | — प | ध प | नि ध | प प | ध प
जो — | — श्री | — — | व — | — ल्ल | — म

नि — | ध सां | — सां | रें गं | रें सां | नि ध
नं — | — द | — न | के — | — ही | — —

नि ध | प रे | — सा
चे — | — रे | — —

संचारी

× | ० | २ | ० | ३ | ४
प प | — प | — प | ध नि | ध प | — प
ति न | — की | — म | हि मा | — मो | — पं

मं — | ध नि | सां सां | नि — | — ध | प —
ब — | र नी | — न | जा — | — ई | — —

प मं | — ग | — रे | ग रे | सा नि़ | रे सा
जि न | — त | — न | ही — | — हूँ | — स

नि़ ध़ | — सा | — रे | ग — | मं प | — —
हूँ — | — स | — — | हे — | — रे | — —

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	ग	ग	प	ध	प	सां	—	—	रें	सां	सां
च	—	तु	र	—	क	हे	—	—	श्री	—	वि
नि	—	ध	सां	—	रें	सां	सां	नि	नि	ध	प
ठ	—	ल	ना	—	थ	प्र	भु	—	सौं	—	—
प	ग	—	प	—	प	ध	नि	ध	प	ध	प
ह	मे	—	हु	—	गि	नि	ये	—	जू	—	—
सां	ध	—	सां	—	रें	रें	गं	रें	सां	नि	ध
ति	न	—	मैं	—	भ	ले	—	—	बु	रे	—
नि	ध	प	रे	—	सा	सां	सां	नि	नि	ध	प
तो	—	हि	ते	—	रे	ब	ल	ब	ल	—	हौं

राग—यमन, ताल—चौताल

लालसंग रासरंग लेत मान रसिक रवन
ग्रग्रता ग्रग्रता ततततततत थेई थेई गति लीने ।

सा रि ग म प ध नि ध्वनि सुनि ब्रजराजकुंवर गावत री
अति जति संगीतनिपुन तननननन आनि आनि गति चीने ॥१॥

अदित मुदित सरदचंद बंद टूटे कंचुकीके
वैभव निरखि निरखि कोटि मदन हीने ।

बिहरत बन रासविलास दंपतिमन ईसद् हास
'छीतस्वामी' गिरिवरधर रस बस तब कीनें ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	—	प	नि	ध	प	प	—	प	म	ग	ग
ला	—	ल	सं	—	ग	रा	—	स	रं	—	ग
ग	—	ग	रे	ग	म॑	प	रे	ग	रे	सा	सा
ले	—	त	मा	—	न	र	सि	क	र	व	न
ऩि	ध़	ऩि	रे	ग	ग	म॑	ग	म॑	प	ध	प
ग्र	ग्र	ता	ग्र	ग्र	ता	त	त	त	त	त	त
सां	—	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑
थे	—	ई	थे	—	ई	ग	ति	—	ली	—	ने

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
सा	—	रे	ग	म॑	प	ध	नि	—	सांनि	रें	सां
सा	—	रि	ग	म	प	ध	नि	—	ध्व-	—	नि
सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	—	नि	नि	ध	प
सु	नि	—	त्र	—	ज	रा	—	ज	कुं	व	र
नि	ध	प	प	—	प	ध	प	म॑	ग	म॑	प
गा	—	व	त	—	री	अ	ति	—	ज	—	ति
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
सं	गी	त	नि	पु	न	त	न	न	न	न	न
सां	—	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑
आ	—	नि	आ	—	नि	ग	ति	—	ची	—	ने